मौसम बदलने की आहट

अनामिका

मौसम

बदलने की आहट

अनामिका

अनामिका

17 अगस्त, 1961, मुजफ्फरपुर (बिहार) में जन्मी अनामिका जी ने अंग्रेजी साहित्य से एम.ए. और पी-एच.डी. किया।

इनकी प्रमुख कृतियों में- 'पोस्ट-एलियट पोएट्री', 'इन क्रिटिसिज्म डाउन द एर्जेज', 'ट्रीटमेंट ऑफ लव इन पोस्ट-वॉर अमेरिकन वीमेन पोएट्स', 'स्त्रीत्व का मानचित्र' (आलोचना), 'बीजाक्षर', 'समय के शहर में', 'खुरदरी हथेलियां' (कविता-संग्रह), 'प्रतिनायक' (कथा-संकलन), 'अवांतर कथा' (उपन्यास), 'समकालीन अंग्रेजी कविता' (अनुवाद), 'मन मांझने की जरूरत', 'मौसम बदलने की आहट' और 'स्त्री विमर्श की उत्तर-गाथा (स्त्री-विमर्श)।

अनामिका जी अब तक- राजभाषा परिषद् सम्मान, भारतभूषण अग्रवाल सम्मान, साहित्यकार सम्मान, साहित्य सेतु सम्मान, ऋतुराज सम्मान से सम्मानित।

संप्रति : रीडर, अंग्रेजी विभाग, सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय।

मौसम बदलने की आहट

चर्चित कवि-कथाकार-चिंतक अनामिका की पुस्तक 'मौसम बदलने की आहट' पारंपरिक स्त्री-विमर्श से हटकर एक ऐसी कोशिश है, जहां लेखिका इतिहास और वर्तमान में एक समीचीन चिंतन करती नजर आती हैं। वह अपनी बात एक अलग ही अंदाज में करते हुए उस राजनीतिक षड्यंत्र को भी पहचान लेती हैं जो स्त्रीवाद को निरे प्रतिक्रियावाद से जोड़कर देखता है। उनके लिए स्त्री आंदोलन ममता का विस्तार है।

स्त्री-साहित्य को वह खुरदरी सतहों के भीतर छिपे जल तत्व का सरस संसाधन मानती हैं तो उपन्यास लेखन में महिलाओं की भागीदारी पर गंभीर चिंतन भी करती हैं। यहां समन्वित नारीवाद और भारतीय देवियों को भी विचार का विषय बनाया गया है और स्त्रीत्व और भाषा को भी।

अनामिका, मिथकों, सामाजिक परंपराओं के साथ ही स्त्री-कथाकारों की स्त्रियों पर चर्चा करते हुए नाइजीरिया की जनाब अल्कली से आधुनिक हिन्दी रचनाकारों तक वृहद विमर्श करती हैं।

अच्छी बात यह है कि अनामिका का आलोचक प्राय: उन अनछुए पहलुओं पर पूरे मन से बात करता है, जिन्हें चर्चा योग्य ही नहीं समझा जाता था। यही कारण है कि आत्मशक्ति विकसित करने में स्त्रियों के आपसी संबंधों की भूमिका के महत्त्व को पहचाना गया है।

जीवन-प्रसंगों से जुड़ा यह विवेचन ही मौसम बदलने की आहट है जिसे हर कोई सुनना-गुनना चाहेगा।

युवकों की उस पीढ़ी को समर्पित

जो स्त्रीवादी आदर्शों से अपना छंद बना रहे हैं।

अनुक्रम

मौसम बदलने की आहट	6
बंधन बदलते रिश्ते का	12
स्त्री भाषा की पराआधुनिकता : संभावना और चुनौतियां	18
आपका नहीं, आप सबका बंटी : साझा मातृत्व की इत्ती कहानियां	22
मुक्त करती हूं तुम्हें मेरे भीषण भय	29
कुछ समसामयिक प्रकाशन : स्त्री सापेक्ष छिटपुट टिप्पणियां	41
समन्वित नारीवाद और भारतीय देवियां	68
स्त्रीत्व और भाषा	81
स्त्री कथाकारों की स्त्रियां	87
तीसरी दुनिया : स्त्री का अंतर्जगत बनाम बहिर्जगत	97
संक्रमणशील भारतीय समाज और स्त्री : कुछ स्थितियां	118
उत्तरवाद और साहित्याध्ययन की चुनौतियां	141
बीज शब्द	153
पुस्तक-सूची	157

मौसम बदलने की आहट

बहुत दिनों से मैं इस प्रश्न पर सोच रही थी कि क्या है हमारे समय की सिग्नेचर ट्यून। एक दिन अचानक दो बच्चों की बातचीत में एक वाक्य डाल्फिन मछली की तरह थूथन उठाए खड़ा था : "Well, it's your problem"। एक मिनट को लगा, यही तो नहीं है हमारे समय की सिग्नेचर ट्यून-यही अलगाववादी नजरिया, जो बच्चों की सोच में भी प्रवेश पा गया है किताबों में जैसे धूल घुस आती है, वैसे ही वे किरकिरे आप्त वाक्य बच्चों की सोच में भी प्रवेश कर गए हैं।

बच्चे तो फिर भी बच्चे हैं, पर हम जो कि *'स्त्रवन समीप भये सित केसा'* की स्थिति से गुजर रहे हैं, दुनिया की इतनी ऊंच-नीच देखी है हमने-हम भला किस मुंह से अस्मिता-आंदोलन को "Well, it's your problem" भाव से टकरा देते हैं? हमें क्यों याद नहीं आता कि इस दुनिया में किसी की समस्या सिर्फ उसी की नहीं होती, खासकर आज का जो हमारा तीसरी दुनिया का समाज है-उसमें अस्मिताओं का ऐसा जटिल अंतर्गुंफन मंचित हुआ है कि किसी एक धागे की यह हैसियत कहां कि वह दूसरे से कह पाए- "Well, it's your problem" शहराती औरतें गांववालियों से यह कहकर नहीं निकल सकती, सवर्ण अवर्ण से, कोठीवालियां कोठेवालियों से या झुग्गीवालियों से, अमरीकी औरतें तीसरी दुनिया की औरतों से।

अगर मेरी कोई लैंगिक अस्मिता है तो चाहते-न-चाहते मेरी एक जातीय-वर्गीय अस्मिता भी है, जो पॉलिथिन के खोल की तरह मेरी जान को लगी है। अगर कभी आपने किसी अस्पताल के बर्न्स वार्ड में 20 प्रतिशत बर्न का केस देखा हो तो आप मेरी बात समझ सकेंगे-पिघली हुई नाइलॉन की साड़ी जैसे चमड़ी से सट जाती है-मेरी लैंगिक पहचान, मेरी जातीय या वर्गीय अस्मिता मेरी चमड़ी से ऐसे आ सटी है कि लगता है अब तो ये मेरी जान के साथ ही जाएगी। यह तो हम सभी जानते हैं कि अंतिम विस्फोट के पहले और वैसे भी-परमाणु के भीतर न्यूट्रॉन, प्रोट्रॉन, इलेक्ट्रॉन आदि कई कणिकाएं अभंग भाव से नाचा करती हैं। कुछ इसी भाव से स्त्रियों की लैंगिक अस्मिता के भीतर एक कॉस्मिक नाच नाचा करती हैं उनकी वर्गीय, क्षेत्रीय, जातीय और राजनीतिक अस्मिताएं। और इसी विशाल कॉस्मिक नृत्य का प्रतिबिंबन है उनका रचना-संसार।

मौसम बदलने की आहट

वैयक्तिक यातनाओं का सामाजिक संदर्भन उनके प्रतिकार का एक आजमाया हुआ अस्त्र है। तकलीफ खतरनाक चीज होती है। उससे यह उम्मीद नहीं करनी चाहिए कि वह अनंत काल तक अंधेरे कोनों में मुंह लपेटे पड़ी रहेगी। न्यूटन ने गति का जो तीसरा नियम दिया, वह प्रगति पर भी उतना ही लागू होता है, जितना सामान्य गति पर। आदमी का स्प्रिंग-तत्व उसे एक सीमा के बाद दबने नहीं देता; और जितनी जोर से लिंग दबता है, उतनी जोर से उछलता भी है, पर स्त्रीवाद को उछल-कूद के निरे प्रतिक्रियावाद से जोड़कर देखना भी एक गहन राजनीतिक षड्यंत्र है, जिससे हम आज तक उबर नहीं पाए।

स्त्री आंदोलन : ममता का विस्तार

दुनिया के कुछ महादुःख हैं : दारिद्रय, कलह, अनिश्चय मृत्यु, रोग, गलतफहमियां, वियोग, आत्माभिव्यक्ति का अभाव, भूख, अपमान और आतंक।

बौद्ध भिक्षुणियों के धीरज से स्त्रियां महादुःखों के निवारण में तन-मन-धन से लगी हैं! 'तन-मन-धन' पर गौर कीजिए! तब मन से तो स्त्रियां पहले भी लगी रहती थीं-पूरे घर को खुश करने में! इन दिनों अपने कमाए हुए धन का विनियोग भी वे कर देती हैं। इस प्रकार शब्दश: तन-मन-धन से वे सेवा में ही लगी रहती हैं और सिर्फ अपने घर की सेवा में नहीं, उन सारे घरों-बेघरों की देखभाल में, जो उनके संपर्क में आएं।

इस तरह से अपने घर का दायरा उन्होंने बहुत बढ़ा लिया है- पूरी वसुधा नहीं तो भी एक मिनी माइक्रो वसुधा अब उनका घर है! वे अब बेदरोदीवार के घर में रहती हैं, जहां कोई उनका बेगाना नहीं! पड़ोसी, सहकर्मी, अखबारवाले, सब्जीवाले, दूधवाले, पाठक, श्रोता, छात्र, क्लाएण्ट, मरीज, गाड़ी-चालक, कंप्यूटर-ऑपरेटर, परचून की दुकानवाले, माली, सेल्सगर्ल्स, सेल्स बॉयज, एल.आई.सी. एजेंट, बैंक-कर्मचारी, डाकघर और पुस्तकालय के लोग, कूरियरवाला, साधु-फकीर, बस-मेट, पुराने सहपाठी, मायके-ससुराल के सभी सरलचित्त लोग, कबाड़ी, कुछ अनाथालय और स्त्री-सदन, थोड़े-से वृद्धाश्रम, बच्चों के शिक्षक और कोच-कम-से-कम इतने लोगों से तो उनके एकदम सच्चे, अंतरंग, दूर तक चलने वाले रिश्ते बनते ही हैं। सबके सुख-दुःख, सबकी हारी-